Dr. Madan Paswan, History.

Class :- B.A. Part-I (Hons. Paper-I + Sub.)

Topic :- Unit-IV (i) Rise & Growth of Gupta Empire - Samudragupta.

Lecture No. 14

Date - 22.7.2020

From Page no. 1 to 2.

भारतीय इतिहास में गुप्त काल का इतिहास श्रेष्ठतम स्थान रखता है। कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात् उत्पन्न हुए राजनीतिक अव्यवस्था और अस्थिरता को समाप्त करके गुप्त सम्राटों ने भारत को सुव्यवस्था और राजनीतिक स्थिरता प्रदान की। प्रायः 200 वर्षों तक गुप्त सम्राटों ने सम्पूर्ण उत्तर भारत और उत्तर-पश्चिम के प्रदेशों को राजनीतिक एकता प्रदान की, विदेशी सत्ता को भारत से मुक्त किया, छोटे-छोटे राजतंत्र, कुलीनतंत्र और जनतंत्रीय राज्यों को नष्टकर दिया और एक बार फिर साम्राज्यवादी धारणा को जीवित किया। एक के बाद एक योग्य और शक्तिशाली गुप्त सम्राटों ने सम्पूर्ण उत्तर भारत को एक शासन-सूत्र में बांध दिया इन्होंने दक्षिण भारत के वाकाटक और पल्लव शासकों की नीतियों को प्रभावित किया और उन्हें अपने प्रभाव और श्रेष्ठता को मानने के लिए बाध्य किया।

गुप्त सम्राटों ने बर्बर हूण जाति के आक्रमणों से भारत की रक्षा की। इतिहास इस बात का साक्षी है कि शक्तिशाली बर्बर हूण भारत को भयभीत अथवा पदाक्रान्त तो किया लेकिन वह, भारतीय राजनीति में कोई प्रभावपूर्ण स्थान भी प्राप्त नहीं कर सके। शक्ति और शौर्य का यह प्रमाण गुप्त सम्राटों की केवल एक विशेषता थी। इसके अतिरिक्त आर्थिक वैभव और बौद्धिक प्रगति गुप्त काल की अन्य विशेषताएँ थीं जिनके कारण धर्म, साहित्य, कला, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में भारत ने अद्वितीय प्रगति की। हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान, धार्मिक सहिष्णुता संस्कृत भाषा और साहित्य की श्रेष्ठता का निर्माण और कला तथा विज्ञान की दृष्टि से अद्वितीय प्रगति आदि सभी कुछ इस काल की देन रही।

चन्द्रगुप्त के पुत्र और उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त (सन् 335-80) ने गुप्त साम्राज्य को व्यापक विस्तार दिया। वे अशोक के विपरीत थे। अशोक शान्ति और अनाक्रमण की नीति में विश्वास करते थे, लेकिन समुद्रगुप्त हिंसा और विजय में प्रसन्न होते थे। उनके दरबारी कवि हरिसेना ने अपने आश्रयदाता की विजयगाथा में एक चमत्कृत करने वाला लेख लिखा। एक अन्य लम्बे अभिलेख में, कवि ने समुद्रगुप्त द्वारा विजित लोगों और देशों के बारे में गिनाया है। इलाहाबाद में यह अभिलेख शांति प्रिय अशोक के अभिलेखीय स्तम्भ पर ही लिखा गया है। इसने अपने विजयों की उद्घोषणा हेतु 'अश्वमेध यज्ञ' सम्पन्न करवाया था। समुद्रगुप्त के प्राप्त सिक्कों में कुछ पर 'अश्वमेध यज्ञ' के नाम पर 'अश्वमेध पराक्रम:' खुदा है। उस पर उसे वीणा वादन करते हुए दिखाया गया है। समुद्रगुप्त ने करीब 6 प्रकार की स्वर्ण मुद्राएँ (गरुड़, धनुर्धर, परशु, अश्वमेध, वीणा धारण एवं व्याघ्र हन्ता) जारी करवायीं। उसकी गरुड़ मुद्राएँ सर्वाधिक लोकप्रिय थीं। अपने सिक्कों पर समुद्रगुप्त ने अप्रतिरथ, व्याघ्र पराक्रम और पराक्रमांक जैसे विरुद धारण किये।

समुद्रगुप्त ने 'धरणिबन्ध' (पृथ्वी को बांधना) अपना वास्तविक लक्ष्य बनाया। समुद्रगुप्त द्वारा जीते गये क्षेत्रों को हम पाँच भागों में विभाजित

(Continue...)

कर सकते हैं:- ⊙ प्रथम भाग में गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र,
⊙ दूसरा भाग में हिमालय के पूर्वी भाग जैसे- नेपाल, असम, बंगाल
⊙ तीसरे भाग में विन्ध्य क्षेत्र में पड़ने वाले आटविक राज्य,
⊙ चतुर्थ भाग में पूर्वी दक्कन एवं दक्षिण भारत के बारह शासक शामिल हैं जिन्हें समुद्रगुप्त ने अपनी अधीनता में लेकर मुक्त कर दिया था।
⊙ पंचम भाग में विदेशी राज्यों का भी उल्लेख किया गया है; जिन्होंने समुद्रगुप्त के साथ सम्बन्ध स्थापित किये।

दैव पुत्रों, शाहियों, शाहानुशाहियों, शकों और मुरुण्डों तथा सिंहल के लोगों और अन्य द्वीपों के सभी निवासियों ने समुद्रगुप्त की सम्मानसूचक सेवा की। उदाहरणतया- कन्याओं को देना, अपने प्रदेश अर्पित करने के चिह्न-स्वरूप गरुड़-मुद्रा देना, उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करना आदि। इस प्रकार समुद्रगुप्त ने अपनी भुजाओं की प्रचण्डता से समस्त संसार को बांधकर एक कर दिया। समुद्रगुप्त की विजयों को देखते हुए स्मिथ ने उसे भारत का नेपोलियन कहा है।

(Continue ....)

Ajanta Officer